पुस्तक - वितान

पाठ : डायरी के पन्ने

लेखिका : ऐन फ्रैंक

पाठ का सार : 1933 में मार्च महीने में फ्रैंकफर्ट के नगर निगम चुनावों में हिटलर की नाजी पार्टी की विजय के साथ फ्रैंकफर्ट में यहूदी-विरोधी प्रदर्शन शुरू हो गए। उस समय ऑटो फ्रैंक परिवार नीदरलैंड्स के एम्सटर्डम में आकर बस गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय में 1940 में जर्मनी ने नीदरलैंड्स पर कब्जा कर लिया। इसी के साथ यहाँ भी यहूदियों पर अत्याचार शुरू हो गए। ऑटो फ्रैंक परिवार, वान दान परिवार और मिस्टर डसेल जुलाई, 1942 में अज्ञातवास में चले गए। अज्ञातवास में ये लोग 4 अगस्त 1944 तक रहे। इसके बाद गेस्टापो (हिटलर की खुफिया पुलिस) द्वारा इन सब को पकड़कर यातनागृह भेज दिया गया। विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय के बाद यहूदियों को आजाद किया गया, परंतु फ्रैंक परिवार में केवल पिता ऑटो फ्रैंक ही बचे, अन्य सब की मृत्यु हो गई।

अज्ञातवास में रहते हुए ऐन फ्रैंक ने 12 जून 1942 को मिली सफेद और लाल कपड़े की जिल्द वाली नोटबुक को अपनी डायरी बनाया और उपहार में मिली गुड़िया किट्टी को संबोधित करते हुए डायरी लिखी। इस डायरी में ऐन ने अपनी पीड़ा, मानसिक और शारीरिक जरूरतों, हँसी-मजाक, युद्ध की पीड़ा, अकेलेपन, यहूदियों पर होने वाले अत्याचारों को जीवंत किया। इस डायरी को 1947 में उनके पिता ने डच में छपवाया। इसके बाद इस डायरी का अनुवाद अनेक भाषाओं में हुआ। बाद में ये डायरी विश्व की सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली डायरी बन गई।

बुधवार, 8 जुलाई 1942

प्यारी किट्टी,

ऐसे लग रहा है रविवार के बाद बरसों बीत गए हैं, क्योंकि इन दिनों में बहुत कुछ हो गया, जैसे पूरी दुनिया ही उलट-पुलट गई है।

तीन बजे हैलो जा चुका था। वो फिर आने वाला था। तभी दरवाजे की घंटी बजी। मुझे सुनाई नहीं दी। कुछ देर बाद रसोई के दरवाजे पर गुस्से में मार्गोट दिखाई दी और मार्गोट ने मुझे बताया कि पापा को ए. एस. एस. (सेंट्रल ऑफिस फॉर ज्यूइश इमीग्रेशन) से बुलावा आया है। माँ मिस्टर वान दान को देखने गई है। मिस्टर वान दान पापा के बिजनेस पार्टनर हैं। मार्गोट ने बताया हम लोग कल छुपने के स्थान पर जा सकते हैं। वान दान परिवार भी हमारे साथ जायेगा।

कुछ समय बाद मिस्टर वान दान और माँ आए। माँ और मिस्टर वान दान अकेले बात करना चाहते थे। मैं और मार्गोट बेडरूम में बैठ कर बातें करने लगे। मार्गोट में मुझे बताया कि बुलावा पापा के लिए नहीं, मार्गोट के लिए आया था। मैं चीखने लगी, क्योंकि मार्गोट केवल सोलह साल की थी। मार्गोट ए. एस. एस. नहीं जायेगी, हम लोग अज्ञातवास जायेंगे। मैंने और मार्गोट ने अपनी जरूरी चीजें एक थैले में भरनी शुरू कर दी।

मिस्टर वान दान मिएप को लेकर आए। मिएप आई और वादा किया कि वो रात को फिर आएगी। वो अपने साथ जूते, ड्रेस, जैकेट, अंडरवियर और स्टॉकिंग्स लेकर गई। मिएप 1933 से पापा की कंपनी में काम कर रही थी। मिएप के पति जॉन और मिएप पापा के अच्छे दोस्त थे। वो एक बार फिर जूते, स्टॉकिंग्स, किताबें आदि अपने बैग और जॉन की जेबों में भरने लगे। वो लोग रात साढ़े ग्यारह बजे चले गए। उस रात मैं घोड़े बेच कर सोई। सुबह साढ़े पाँच बजे मैं मार्गोट के उठाने पर उठी। यहूदी उस समय सूटकेस लेकर कहीं जा नहीं सकते थे। इसलिए मैंने दो बनियानें, तीन पैंटें, एक ड्रेस, उसके ऊपर एक स्कर्ट, एक जैकेट, एक बरसाती, दो जोड़ी स्टॉकिंग्स, भारी जूते, एक कैप, एक स्कार्फ और इस सबके अलावा और भी बहुत कुछ ओढ़-पहन लिया। मेरा दम घुट रहा था, लेकिन किसी को भी परवाह नहीं थी।

मार्गोट ने अपने थैले में स्कूल की किताबें ठूँस ली और अपनी साइकिल लेकर मिएप की निगरानी में अज्ञात जगह रवाना हो गई। साढ़े सात बजे हमने भी अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया। मूर्जे (बिल्ली) एकमात्र ऐसी जीवित प्राणी थी, जिसे मुझे गुडबाई कहना था। हम किसी तरह वहाँ से निकल कर सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाना चाहते थे।

बाकी कल

तुम्हारी ऐन

गुरुवार, 9 जुलाई 1942

प्यारी किट्टी,

मम्मी, पापा और मैं बड़े-बड़े शॉपिंग बैग में और बड़े-बड़े थैलों में अल्लम-गल्लम सामान भरकर चल दिए। सुबह काम पर जाने वाले लोग हमें सहानुभूति से देख रहे थे। वो हमें कोई सहायता नहीं दे सकते थे।

जब हम गली में पहुँचे, तब पापा-मम्मी ने बताया। पिछले कई महीनों से थोड़ा-थोड़ा करके सामान, फर्नीचर, कपड़े आदि फ्लैट से बाहर ले जाते रहे थे। 16 जुलाई को हमें अज्ञातवास में जाना था। परंतु मार्गोट का बुलावा आ जाने के कारण कुछ दिन पहले अज्ञातवास में जाना पड़ रहा है।

छिपने का स्थान पापा के ऑफिस की इमारत थी। इस ऑफिस में अधिक लोग काम नहीं करते थे। तल मंजिल पर बड़ा-सा गोदाम है। इसके अलग-अलग हिस्से हैं, जैसे गोदाम, पिसाई का कमरा वगैरह, जहाँ इलायची, लौंग और काली मिर्च पीसे जाते हैं। गोदाम से सटा ऑफिस है, जिसका एक द्वार बाहर और एक द्वार अंदर खुलता है, जहाँ सीढ़ियाँ हैं। सीढ़ी चढ़ने पर एक दरवाजा आता है, उस पर कार्यालय लिखा है। आगे वाला फ्रंट ऑफिस है, जो हवादार है। यहाँ बेप, मिएप और मिस्टर क्लीमेन बैठते हैं। एक छोटा-सा गलियारा है। इस गलियारे के पार एक छोटा दमघोटू कमरा है। यह बैक-ऑफिस है। इसमें मिस्टर कुगलर और मिस्टर वान दान बैठते थे। मिस्टर कुगलर के ऑफिस से निकल कर लंबे, तंग गलियारे से कोयले वाले गोदाम की ओर बढ़ते हैं। यहाँ चार सीढ़ियाँ चढ़कर प्राइवेट ऑफिस में पहुँचते हैं। यह इमारत का शो पीस है। यहाँ फर्नीचर, फर्श, कालीन, रेडियो, लैंप सब उत्तम दर्जे का है। इसके पास रसोई और पखाना है।

यहाँ से एक रास्ता दूसरी मंजिल की तरफ जाता है। सीढ़ी खत्म होते ही थोड़ी खुली जगह है। दाईं तरफ मसाले रखने का स्टोर, अटारी और मियानी है। घर के सामने की तरफ से एक डच डिजाइन की सीधी और घुमावदार सीढ़ियाँ हैं। सीढ़ियों के ऊपर दाईं तरफ का दरवाजा हमारी गुप्त एनेक्सी की तरफ जाता है। कोई सोच भी नहीं सकता कि इस मटमैले दरवाजे के पीछे भी कमरे हैं। सामने की सीढ़ियाँ ऊपर की तरफ जाती हैं। बाईं तरफ का तंग गलियारा एक बड़े कमरे में जाकर खुलता है। यह कमरा फ्रैंक परिवार का ड्राइंगरूम, बैडरूम और स्टडीरूम है। सीढ़ियों के बाईं और गुसलखाना और बिना खिड़की वाला कमरा है, जिसमें वाशबेसन है। किनारे के दरवाजे पाखाने की तरफ और मेरे तथा मार्गोट के कमरे की तरफ जाते हैं। सीढ़ियाँ चढ़कर बिल्कुल ऊपर जाने पर एक बहुत बड़ा खुला हवादार कमरा है, इसमें गैस का चूल्हा, सिंक है। यह मिस्टर, मिसेज वान दान का बैडरूम और रसोई घर है। एक छोटा कमरा पीटर वान दान का बैडरूम है। मैंने तुम्हें पूरी इमारत की सैर करवा दी।

तुम्हारी ऐन

शुक्रवार, 10 जुलाई 1942

मेरी प्यारी किट्टी,

मिएप हमें लंबे गलियारे से सीढ़ियों से ऊपर दूसरी मंजिल पर और फिर एनेक्सी में ले आई। मार्गोट वहाँ पहले आ चुकी थी और हमारा इंतजार कर रही थी। हमारी बैठक और दूसरे कमरे सामान से भरे हुए थे। छोटा कमरा छत तक कपड़ों से उटा पड़ा था। माँ और मार्गोट थके और बेहाल थे। वो बिना चादरों वाली गद्दियों पर ही पसर गईं, लेकिन पापा और मैंने सफाई का मोर्चा संभाला और काम में जुट गए। हम सारा दिन पैकिंग खोलते रहे, अलमारियाँ भरते रहे, कीलें ठोकते रहे, सामान को ठिकाने लगाते रहे। हमने सारा दिन गर्म खाना नहीं खाया। थक कर साफ बिस्तरों पर हम सो गए।

मंगलवार सुबह पिछली रात के छोड़े काम को पूरा करना शुरू किया। बेप और मिएप हमारे राशन कूपनों से शॉपिंग करने गई। पापा ने ब्लैक आउट वाले पर्दे लगाए। मैंने रसोई के फर्श को रगड़ कर साफ़ किया। बुधवार तक मुझे पता ही नहीं लगा कि मेरी जिंदगी में कितना बड़ा परिवर्तन आ गया है।

तुम्हारी ऐन

VASUNDHARAHINDI.COM

शनिवार, 28 नवंबर 1942

मेरी प्यारी किट्टी,

इन दिनों हमने बिजली का अधिक इस्तेमाल किया। इसलिए हमें किफायत से बिजली खर्च करनी होगी, नहीं तो बिजली कट जाएगी। एक पखवाड़े तक कोई बिजली नहीं। शाम साढ़े चार बजे अंधेरा हो जाता है, इसलिए पढ़ नहीं सकते। इसलिए इस वक्त पर हम उल-जुलूल हरकतें करते हैं, पहेलियाँ बूझते हैं, अंधेरे में व्यायाम करते हैं, अंग्रेजी या फ्रेंच बोलते हैं, किताबों की समीक्षा करते हैं। हम कुछ भी करें, थोड़ी देर बाद बोर लगने लगता है। कल मैंने वक्त गुजारने के लिए नया तरीका निकाला। दूरबीन से पड़ोसियों के रोशनी वाले कमरे में झाँकने लगी।

मिस्टर डसेल मुझे बाबा आदम के जमाने के अनुशासन मास्टर लगते हैं और लंबे लंबे भाषण देते हैं। हम तीन बच्चों में मुझे खरदिमाग और तुनकमिज़ाज समझा जाता है। मिस्टर डसेल अच्छे-खासे चुगलखोर हैं। वो सारी बातों की रिपोर्ट मम्मी को देते। मिस्टर डसेल के उपदेश के बाद मुझे मम्मी का उपदेश सुनना पड़ता है। किस्मत अच्छी हुई, तो पाँच मिनट बाद मिसेज वान दान मुझे बुला लेती हैं। रात को जब मैं बिस्तर पर जाती हूँ, तब अपनी खामियों के विषय में सोच कर कभी हँसती हूँ और कभी रोती हूँ।

तुम्हारी ऐन

VASUNDHARAHINDI.COM

शुक्रवार, 19 मार्च 1943

मेरी प्यारी किट्टी,

हमने उत्साहवर्धक अफ़वाह सुनी - “टर्की इंग्लैंड के पक्ष में”। हज़ार गिल्डर के नोट अवैध घोषित किए जा रहे हैं। यह ब्लैक मार्केट का धंधा करने वालों और उन जैसे अज्ञातवास में रहने वालों के लिए झटका है। हज़ार गिल्डर का नोट बदलने के लिए आपको सबूत देना होगा कि नोट आपके पास कहाँ से आया। पाँच सौ गिल्डर के नोट भी अगले हफ़्ते तक बेकार हो जाएँगे। गिएज एंड कंपनी ने इन नोटों को कर अदायगी में निपटा दिया है, इसलिए उनकी गर्दन पानी से ऊपर है।

मिस्ट्र डसेल को कहीं से बाबा आदम के जमाने की पैरों से चलने वाली दाँतों की ड्रिल मशीन मिल गई है। इसका मतलब जल्दी ही मेरे दाँतों का पूरा चेकअप हो पाएगा।

मिस्टर डसेल घर के कायदे कानून नहीं मानते। वो चार्लोट और दूसरे लोगों से चिट्ठी-पत्री कर रहे हैं। मार्गोट उनकी डच अध्यापिका है और उनके पत्र ठीक करती है। पापा ने उन्हें ऐसा करने से मना किया है।

जनाब हिटलर घायल सैनिकों से बात कर रहे हैं। घायल सैनिक अपने जख्म दिखाने में गर्व महसूस कर रहे हैं। हिटलर से हाथ मिलाने के ख्याल से ही इतने उत्साहित हो रहे हैं कि वह एक शब्द भी नहीं बोल पाया।

मुझसे मिस्टर डसेल का साबुन जमीन पर गिर गया। मेरा पैर उस पर पड़ गया। अब साबुन गायब है। उनको हर महीने युद्ध के समय के घटिया साबुन की एक ही बट्टी मिलती है। मैंने पापा से कहा कि मिस्टर डसेल को साबुन की भरपाई कर दें।

तुम्हारी ऐन

VASUNDHARAHINDI.COM

शुक्रवार, 23 जनवरी 1944

मेरी प्यारी किट्टी,

इधर कुछ सप्ताहों से मुझे परिवार के वंश वृक्ष और राजसी परिवारों की वंशावली तालिकाओं में रुचि हो गई है। इस खोज से तुम्हारे हाथ रोचक जानकारियाँ लगती हैं।

मैं स्कूल का काम बहुत मेहनत से करती हूँ। रेडियो पर बी.बी.सी. की होम सर्विस को समझती हूँ। इसके बावजूद मैं अपने ज्यादातर रविवार अपने प्रिय फिल्मी कलाकारों की तस्वीरें अलग करने में गुजारती हूँ। मिस्टर कुगलर हर सोमवार मेरे लिए "सिनेमा एंड थियेटर" पत्रिका की प्रति लाते हैं। बेप अक्सर छुट्टी के दिन अपने बॉयफ्रेंड के साथ फिल्म देखने जाती है। शनिवार वो मुझे बता देती है कि वो कौन सी फिल्म देखने जा रही है। मैं फिल्म के मुख्य नायकों, नायिकाओं के नाम तथा समीक्षाएँ फर्राटे से बोलना शुरु कर देती हूँ।

जब भी मैं नई केश सज्जा बनाकर बाहर आती हूँ, मैं सबके चेहरों पर उग आई असहमति साफ़ पढ़ सकती हूँ। वो मुझे बोलते हैं कि मैं फलाँ फिल्म स्टार की नकल कर रही हूँ। मेरा हेयर स्टाइल आधे घंटे से ज्यादा नहीं टिका रहता। जब मैं उससे बोर हो जाती हूँ, सीधे गुसलखाने में जाती हूँ और मेरे बाल पहले की तरह उलझे और घुँघराले हो जाते हैं।

तुम्हारी ऐन

VASUNDHARAHINDI.COM

बुधवार, 28 जनवरी 1944

मेरी प्यारी किट्टी,

आज सुबह मैं सोच रही थी कि हर दिन हमें बासी खबरें बार-बार चबानी पड़ती हैं। अगर खाने के वक्त बातचीत राजनीति या अच्छे खाने के बारे में नहीं हो रही होती तो मम्मी और मिसेज वान दान अपने बचपन की कहानियाँ लेकर बैठ जाती हैं, जो हम हजार बार सुन चुके हैं या फिर डसेल शुरू हो जाते हैं - खूबसूरत रेस के घोड़े, उनकी चार्लोट का महँगा वार्डरोब, लीक करती नावें, चार बरस की उम्र में तैर सकने वाले बच्चे, दर्द करती माँसपेशियाँ, डरे मरीज। किसी भी लतीफे को शुरू करने से पहले हमें वो लतीफा पहले ही आता, ऐसे में सिर्फ लतीफा सुनाने वाला हँसता।

जॉन और मिस्टर क्लीमेन को अज्ञातवास में छुपे या भूमिगत हो गए लोगों के बारे में बात करना अच्छा लगता है। भूमिगत होना अब आम बात है। कई प्रतिरोधी दल भी हैं, जो नकली पहचानपत्र बनाते हैं, अज्ञातवास में छुपे लोगों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। लोग अपनी जान जोखिम में डालकर दूसरों की मदद करते हैं। इसका सबसे बढ़िया उदाहरण हमारी मदद करने वाले हैं। उम्मीद है वे हमें सुरक्षित किनारे ले आएँगे।

कई अजीब कहानियाँ चल रही हैं। गेल्डरलैंड में भूमिगत हो चुके आदमियों और पुलिस के बीच फुटबॉल मैच हुआ। हिल्वरसम में अज्ञातवास में रह रहे लोगों के लिए नए राशन कार्ड जारी किए गए। अगर राशन कार्ड न हो, तो एक कार्ड के 60 गिल्डर देने पड़ते हैं।

इन सब के साथ यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि इस तरह की चालाकियों की जर्मनों को हवा भी न लगे।

तुम्हारी ऐन

VASUNDHARAHINDI.COM

बुधवार, 29 मार्च 1944

मेरी प्यारी किट्टी,

कैबिनेट मंत्री मिस्टर स्टीन ने लंदन से डच प्रसारण में कहा - युद्ध के बाद युद्ध का वर्णन करने वाली डायरियों और पत्रों का संग्रह किया जाएगा। मैं सही बता रही हूँ, युद्ध के दस साल बाद लोग इससे कितना चकित होंगे कि जब उन्हें पता चलेगा कि हम लोग कैसे रहते थे, हम क्या खाते थे और यहूदियों के रूप में अज्ञातवास में हम क्या-क्या बातें करते थे। पिछले रविवार 350 ब्रिटिश वायुयानों ने इज्जमुईडेन पर 550 टन गोला-बारूद बरसाया। हमारे घर काँपने लगे।

लोगों को सब्जियों और अन्य सामानों के लिए लाइन में खड़े होना पड़ता है। डाक्टर मरीजों को देख नहीं पाते, चोरी-चकारी बहुत बढ़ गई है। डच लोगों में अंगूठी पहनने का रिवाज तक नहीं रह गया है। छोटे-छोटे आठ-दस साल के बच्चे लोगों के घरों में घुस जाते हैं और जो हाथ लगता है, उठा ले जाते हैं। गली-गली के नुक्कड़ों पर लगी बिजली की घड़ियां, सार्वजनिक टेलीफोनों के पुर्जा-पुर्जा गायब हैं।

हफ्ते का राशन दो दिन भी नहीं चलता। पुरुषों को जर्मनी भेजा जा रहा है, बच्चे बीमार हैं या भूखे हैं। सब लोग फटे-पुराने कपड़े और जूते पहन कर काम चला रहे हैं। खाद्य कार्यालयों, पुलिस, अधिकारी - सभी या तो अपने नागरिकों की मदद कर रहे हैं या उन पर कोई आरोप लगाकर जेल भेज देते हैं। बहुत कम डच लोग गलत पक्ष में हैं।

तुम्हारी ऐन

VASUNDHARAHINDI.COM

मंगलवार, 11 अप्रैल 1944

मेरी प्यारी किट्टी,

शनिवार कोई दो बजे का वक्त होगा। तेज़ गोलाबारी शुरू हो गई। मशीनगनें चल रही थी। रविवार मेरे आमंत्रण पर पीटर साढ़े चार बजे मुझसे मिलने के लिए आया। सवा पाँच बजे हम ऊपर सामने वाली अटारी पर चले गए। छः बजे से सात बजे तक रेडियो पर मौत्ज़ार्ट संगीत बज रहा था। हम आराम से बैठ सकें, इसलिए मुझे जो कुशन सामने नजर आया, मैं ऊपर लेती गई। हम एक पेटी पर बहुत सट कर बैठे थे। कुशन मिस्टर डसेल का था और उन्होंने पूरे घर को सिर पर उठा लिया।

साढ़े नौ बजे पीटर ने पापा से कहा कि वह ज़रा ऊपर आएँ। जिस तरीके से मर्द बात कर रहे थे, मैं शर्त लगा कर कह सकती हूँ कि सेंधमारी हो रही थी। मर्द नीचे चले गए और औरतें बातें कर रही थी। दस बजे पापा और मिस्टर वान दान आए और बोले - बत्तियाँ बंद करके ऊपर की मंजिल पर चले जाओ। पुलिस के आने की आशंका है।

सेंधमारों ने कई बार अंदर घुसने की कोशिश की। मिस्टर वान दान ने दरवाजे पर कुल्हाड़ी से प्रहार किया, तब शांति हुई। बाहर से एक आदमी और औरत टॉर्च की रोशनी फेंकते दिखाई दिए। ये पुलिस थी। मर्दों ने किसी तरह अपने को बुककेस के पीछे छिपाया।

तुम्हारी ऐन

VASUNDHARAHINDI.COM

मंगलवार, 13 जून 1944

मेरी प्यारी किट्टी,

मेरा एक और जन्मदिन गुजर गया। मैं पंद्रह बरस की हो गई हूँ। मुझे काफी सारे उपहार मिले। इतिहास की पुस्तक, चड्ढियों का सेट, दो बेल्टें, एक रुमाल, दही के दो कटोरे, जैम की शीशी, शहद के दो बिस्किट, मम्मी-पापा की तरफ से वनस्पति विज्ञान की पुस्तक, सोने का ब्रेसलेट, स्टिकर एल्बम, बायोमाल्ट और मीठे मटर, मिठाई, कॉपियाँ, मारिया तेरेसा नाम की किताब, क्रीम भरे चीज़ के तीन स्लाइस। पीओनी फूलों का गुलदस्ता पीटर ने उपहार में दिया।

कल चर्चिल, स्मट्स, आइजनहावर तथा आर्मोल्ड उन फ्राँसीसी गाँवों में गए, जिन्हें ब्रिटिश सैनिकों ने अपने कब्जे में ले लिया था। ब्रिटिश सैनिक अपने मकसद को पूरा करने के लिए निकल पड़े। हॉलैंड के लोग ब्रिटिश के कब्जे के पक्ष में नहीं। लोग चाहते हैं ब्रिटिश लड़े, संघर्ष करे, हॉलैंड को आजाद करवा कर हॉलैंड छोड़कर लौट जाए। मूर्खों को पता नहीं, ब्रिटेन अगर जर्मनी से संधि कर लेता, तो हॉलैंड जर्मनी बन जाता। लोगों को समझना चाहिए कि जर्मन आक्रांता है और ब्रिटेन रक्षक।

मेरे दिमाग में हर समय इच्छाएँ, विचार, आरोप तथा डाँट-फटकार ही चक्कर खाते रहते हैं। मैं सचमुच घमंडी नहीं हूँ, जितना लोग मुझे समझते हैं। मैं अपनी कमजोरियों और खामियों को बेहतर तरीके से जानती हूँ। मैं अपने आप को बदलना चाहती हूँ और काफी कुछ बदल भी चुकी हूँ। मुझे नाक घुसेड़, अक्खड़ समझने वाले दो लोग हैं - मिसेज वान दान और डसेल। वास्तव में वो तीस मार खाँ हैं, मैं नहीं। मैं अपने आपको इतना प्रताड़ित करती हूँ कि दो बोल सांत्वना के लिए तरस जाती हूँ। कोई तो हो जो मेरी भावनाओं को समझें। अफ़सोस! उसकी तलाश जारी है।

पीटर मुझे प्यार करता है। गर्लफ्रेंड की तरह नहीं, एक दोस्त की तरह। उसका स्नेह दिन पर दिन बढ़ रहा है। मैं पीटर की प्रेम दीवानी हूँ। अगर मैं उसके कमरे में एक-दो दिन के लिए न जाऊँ, तो मेरी बुरी हालत हो जाती है। पीटर शांतिप्रिय, सहनशील और सहज आत्मीय व्यक्ति है । पीटर अपने को अभिव्यक्त नहीं करता। उसने मुझे अनुमति था ही नहीं दी है कि मैं उसे समझूँ। पीटर घुन्ना है। उससे संवाद करना बहुत मुश्किल है ।

मैं बहुत समय से बाहर नहीं निकली हूँ। प्रकृति के लिए पागल हो रही हूँ। नीला आकाश, पक्षियों की चहचहाहट, चाँदनी और खिलती कलियाँ मुझे अपने आकर्षण में बाँधते हैं, परंतु समय बदल गया है। बेहद गर्मी में मैं रात साढ़े ग्यारह बजे तक आँखें खोले बैठे रही चाँद को देखने के लिए। चौंध अधिक थी, खिड़की खोलने का जोखिम नहीं उठा सकती थी। कई महीने बाद एक मौका आया, ऊपर की मंजिल की खिड़की खोल कर बैठी रही। यह एक गहरी, साँवली बरसात की रात थी। तेज हवाएँ चल रही थी। बादलों के बीच लुकाछिपी चल रही थी। यह दृश्य मंत्रमुग्ध करने वाला था। ये पिछले डेढ़ साल में पहली बार हो रहा था। इसके बाद अकसर मैं रसोई और प्राइवेट ऑफिस की

खिड़की से प्रकृति के नजारे देखती रही। अस्पतालों और जेलों में रहने वाले लोग इंतजार करते हैं कि कब वो प्रकृति के अनूठे उपहार का आनंद ले पाएँगे। आसमान, बादलों, चाँद और तारों को देखना मुझे शाँति, आशा से सराबोर कर देता है। प्रकृति शांति की रामबाण दवा है। प्रकृति मुझे विनम्रता का उपहार देती है।

पुरुषों ने स्त्रियों पर इस आधार पर शासन करना शुरू कर दिया कि वे स्त्रियों से शारीरिक रूप से अधिक सक्षम हैं, वो कमाकर लाते हैं, बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। परंतु शिक्षा, काम तथा प्रगति ने औरतों की आँखें खोल दी हैं। कई देशों में स्त्रियों को बराबरी का हक दिया जाने लगा है। आधुनिक स्त्रियाँ पूरी तरह स्वतंत्र होने का हक चाहती हैं।

महिलाओं को पूरा सम्मान मिलना चाहिए। सैनिकों और युद्धों के वीरों का सम्मान किया जाता है, उन्हें अलंकृत किया जाता है, उन्हें अमर बना डालने तक का शौर्य प्रदान किया जाता है। लेकिन कितने लोग औरतों को भी सैनिक का दर्जा देते हैं। "मौत के खिलाफ मनुष्य" नाम की किताब में मैंने पढ़ा था कि एक युद्ध में लड़ने वाला वीर जितनी तकलीफ़, पीड़ा, बीमारी और यंत्रणा से गुजरता है, उससे कहीं अधिक तकलीफ औरतें बच्चे को जन्म देते समय झेलती हैं। बदले में उसे पुरस्कार क्या मिलता है? वो अपना आकर्षण खो देती है, उसे धकिया दिया जाता है, बच्चे उसे छोड़ देते हैं और उसका सौंदर्य विदा हो जाता है। वो मानव जाति की निरंतरता को बनाए रखने के लिए इतनी तकलीफों से गुजरती है।

मैं ऐसे लोगों की भर्त्सना करती हूँ जो ये नहीं मानते कि समाज में औरतों का योगदान कितना महान और मुश्किल है। मेरा विश्वास है अगली सदी आने तक यह मान्यता बदल चुकी होगी। बच्चे औरतें ही पैदा करेंगी, पर वे अधिक सम्मान और सराहना की हकदार बनेंगी।

तुम्हारी, ऐन फ्रैंक

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) "यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलने वाली एक आवाज़ है। एक ऐसी आवाज़, जो किसी संत या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण लड़की की है।" इल्या इहरनबुर्ग की इस टिप्पणी के संदर्भ में ऐन फ्रैंक की डायरी के पठित अंशों पर विचार करें।

उत्तर : ऐन फ्रैंक की डायरी में ऐन के व्यक्तिगत जीवन का वर्णन नहीं है, अपितु यह साठ लाख यहूदियों पर किए गए अत्याचार की कहानी है। यह कहानी किसी संत द्वारा या किसी कवि के द्वारा नहीं कही गई है, बल्कि एक साधारण लड़की के द्वारा कही गई है।

ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी में लिखा है कि दूसरे विश्व युद्ध के समय हिटलर ने यहूदियों पर बहुत अत्याचार किए। यहूदियों को यातनागृहों में डाल दिया जाता था। यातनागृह की यातनाओं और अत्याचारों से बचने के लिए कई यहूदी अज्ञातवास में चले गए। यहूदी सड़क पर सूटकेस लेकर नहीं चल सकते थे। सामान राशन से मिलता था, यहाँ तक कि बिजली पर भी राशनिंग लागू होती थी। अज्ञातवास के घर में न उन्हें सूर्य का प्रकाश मिलता था और न ही चंद्रमा की चाँदनी। चोर-उचक्कों का बोलबाला था। उनसे अपने सामान की रक्षा भी एक समस्या थी। कुछ नया नहीं था, इन सबसे ऊपर उन्हें हर वक्त पकड़े जाने का डर रहता। ये कहानी किसी एक घर की नहीं, बल्कि साठ लाख यहूदियों की थी। इल्या इहरनबुर्ग का कथन बिलकुल उचित है।

प्रश्न 2) "काश कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफसोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला.....।" क्या आपको लगता है कि ऐन के इस कथन में उसके डायरी लेखन का कारण छिपा है?

उत्तर : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा वो अपने भावों को तरह-तरह से अभिव्यक्त करता है। एक व्यक्ति दूसरे से बात करके अपने भाव व्यक्त करता है। परंतु जब व्यक्ति के भाव को कोई समझे ही नहीं और सुने नहीं, तो ऐसे में व्यक्ति अपने भावों को लिखकर या अपने किसी काल्पनिक पात्र के सामने व्यक्त करता है। ऐन के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ।

अज्ञातवास में कुल आठ लोग थे, परंतु ऐन को कोई नहीं समझता था। वो सबसे छोटी थी तथा उसे नकचड़ी, तुनक मिजाज और मुँहफट समझा जाता था। मिसेज़ वान दान और मिस्टर डसेल अक्सर उस में कमियाँ निकालते और उसकी शिकायत उसकी मम्मी से करते। परिणामस्वरुप उसे मम्मी से भी डाँट और उपदेश सुनने पड़ते। पीटर से उसकी दोस्ती थी, परंतु पीटर उसे घुन्ना लगता। ऐन को उससे बात करना सरल नहीं लगता था।

शायद यही सब कारण थे कि ऐन ने अपने मन के भावों को डायरी के माध्यम से व्यक्त करना शुरू कर दिया और डायरी में अपनी गुड़िया किट्टी को संबोधित करके पत्र लिखे।

प्रश्न 3) "प्रकृति-प्रदत्त प्रजनन-शक्ति के उपयोग का अधिकार बच्चे पैदा करें या न करें अथवा कितने बच्चे पैदा करें - इसकी स्वतंत्रता स्त्री से छीनकर हमारी विश्व-व्यवस्था ने न सिर्फ स्त्री को व्यक्तित्व-विकास के अनेक अवसरों से वंचित किया है, बल्कि जनाधिक्य की समस्या भी पैदा की है।" ऐन की डायरी के 13 जून 1944 के अंश में व्यक्त विचारों के संदर्भ में इस कथन का औचित्य ढूँढें।

अथवा

महिलाओं के बारे में ऐन फ्रैंक के विचारों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

महिलाओं के बारे में ऐन फ्रैंक के विचार वर्तमान जीवन मूल्यों के अनुसार कितने प्रासंगिक हैं? सोदाहरण विवेचन कीजिए।

उत्तर : ऐन का मानना है कि पुरुष अपनी शारीरिक क्षमता के कारण स्त्रियों को निम्न समझते हैं। इसी कारण जो सम्मान स्त्रियों को मिलना चाहिए, वो नहीं मिलता। एक सैनिक युद्ध में जितने कष्ट उठाता है, उससे कहीं अधिक कष्ट एक स्त्री बच्चे के जन्म देते समय सहती है। बच्चे को जन्म देने के बाद स्त्री अपना आकर्षण खो देती है और उसे एक तरफ धकेल दिया जाता है, जबकि स्त्री मानव जाति की निरंतरता को बनाए रखने के लिए इतने कष्ट उठाती है। ऐन उन चीजों, मूल्यों, प्रथाओं और व्यक्तियों की भर्त्सना करती है, जो ये नहीं मानते कि स्त्रियों का योगदान बहुत महान और मुश्किल है।

वर्तमान समय में परिस्थितियाँ बदल रही हैं। आज स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त हैं। भारत जैसे देश में भी स्त्रियाँ पुरुषों के समान प्रत्येक स्थान पर आगे बढ़ रही हैं। अब संतान उत्पन्न करनी है या नहीं, ये अधिकार पूर्ण रूप से स्त्रियों पर निर्भर करता है। चाहे भारत के ग्रामीण क्षेत्र में स्त्रियों को आज भी निम्न समझा जाता है, पर फिर भी ऐन की डायरी में वर्णित स्त्रियों की स्थिति से बहुत अच्छी हैं।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 4) ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है, तो साथ ही उसके निजी सुख-दुख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी। इन पृष्ठों में दोनों का फर्क मिट गया है। इस कथन पर विचार करते हुए अपनी सहमति या असहमति तर्कपूर्ण व्यक्त करें।

अथवा

"ऐन की डायरी" एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है। कैसे?

अथवा

"ऐन की डायरी" उसके सुख-दुख का भावनात्मक दस्तावेज है। तर्क सहित उत्तर दें।

अथवा

"ऐन फ्रैंक की डायरी" को एक महत्वपूर्ण दस्तावेज क्यों माना जाता है?

अथवा

"ऐन की डायरी इतिहास के एक सबसे आतंकप्रद और दर्दनाक अध्याय के साक्षात् अनुभव का बयान करती है।" पाठ के आधार पर पुष्टि कीजिए।

उत्तर : ऐन एक यहूदी लड़की है। हॉलैंड पर जर्मनी का अधिकार हो गया है। यहूदियों को पकड़ कर यातनागृहों में भेजा जा रहा है, इसलिए कई यहूदी परिवार अज्ञातवास में चले गए हैं। ऐन का परिवार भी अज्ञातवास में जाने के लिए मजबूर हो जाता है। अज्ञातवास में रहते हुए ऐन ने अपनी डायरी में अपने सुखों-दुखों और भावनात्मक उथल-पुथल का सुंदर चित्रण किया है। कैसे उसे नकचड़ी, तुनकमिजाज समझा जाता है। मिसेज़ वान दान और मिस्टर डसेल उसके हर मामले में नुक्ताचीनी करते हैं, माँ से शिकायत करके उसे डाँट लगवाते हैं। ऐन पीटर को पसंद करती है, परंतु वह उसे घुन्ना लगता है। प्रकृति को देखने के लिए वो तरसती है। परंतु जन्मदिन पर मिले उपहार, मिस्टर कुगलर द्वारा हर सोमवार को उसके लिए "सिनेमा एंड थियेटर" पत्रिका लाना आदि, ये चीजें उसे खुश करती हैं। ऐन की डायरी में स्थान-स्थान पर इतिहास की घटनाओं का वर्णन हुआ है, इसलिए ये डायरी एक ऐतिहासिक दस्तावेज भी है। जैसे :-

1. मार्गोट को ए.एस.एस. से बुलाए जाने का नोटिस।
2. अपने को बचाने के लिए यहूदियों का अज्ञातवास में रहना।
3. युद्ध के कारण प्रत्येक वस्तु राशन पर मिलना, वो भी पूरा नहीं।
4. आर्थिक संकट के कारण हजार और पाँच सौ गिल्डर के नोट अवैध घोषित करना।
5. चोरी-चकारी, सेंधमारी का बढ़ना।
6. टर्की की तटस्थता।

7. ब्रिटेन द्वारा हॉलैंड को मुक्त कराने का प्रयास।
8. हिटलर का सैनिकों से साक्षात्कार।
9. एक दिन में 350 वायुयानों द्वारा 550 टन गोला-बारूद बरसाना।
10. कुछ डच नागरिकों द्वारा ब्रिटेन को मसीहा मानना।

उपरोक्त सभी उदाहरण सिद्ध करते हैं कि ऐन की डायरी उसके निजी सुख-दुख और भावनात्मक उथल-पुथल को तो प्रकट करती ही है, साथ ही ये एक ऐतिहासिक दस्तावेज भी है।

प्रश्न 5) ऐन ने अपनी डायरी किट्टी को संबोधित चिट्ठी की शक्ल में लिखने की जरूरत क्यों महसूस की होगी?

अथवा

ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी किट्टी को संबोधित चिट्ठी के रूप में क्यों लिखी होगी?

उत्तर : ऐन अज्ञातवास में रह रही है। उसके साथ उस घर में सात सदस्य और भी हैं। ऐन सबसे छोटी है। अज्ञातवास में रहते हुए घर के सदस्यों से ही बात कर सकते हैं, परंतु उन लोगों ने अपने किस्से इतनी बार सुनाए हैं कि वो किस्से सबको याद हो गए हैं, अर्थात् बातों में कुछ नयापन नहीं है। मिसेज वान दान और डसेल ऐन पर तरह-तरह के आरोप लगाते हैं। परिणाम स्वरूप ऐन को अपनी मम्मी से उपदेश सुनने पड़ते हैं। पीटर ऐन का दोस्त तो है, पर ऐन उससे अपने भाव प्रकट नहीं कर सकती।

ऐसे में ऐन अपने मन के भाव अपनी डायरी में लिखने लगती है और अपनी गुड़ियों को संबोधित करके लिखती है, अर्थात् वो अपनी निर्जीव गुड़िया को अपने मन की बात कहती है और गुड़िया सुनती भी है, कोई प्रतिक्रिया नहीं करती।

प्रश्न 6) ऐन द्वारा वर्णित सेंधमारों वाली घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : दूसरे विश्व युद्ध के समय लोगों को खाने का सामान राशन से मिलता था, जो दो दिन में ही खत्म हो जाता था। अर्थ-व्यवस्था का बुरा हाल था, जिस कारण चोरी-चकारी बढ़ रही थी। डॉक्टर मरीजों को नहीं देख पाते थे, क्योंकि उनके पीठ मोड़ते ही उनकी कार और मोटरसाइकिल चुरा ली जाती थी। डच लोगों में अंगूठी पहनने का रिवाज खत्म हो गया था। छोटे-छोटे आठ-दस साल के बच्चे लोगों के घरों की खिड़कियाँ तोड़ घुस जाते थे और जो उनके हाथ लगता, उठाकर ले जाते थे। लोगों के द्वारा अपना घर खाली छोड़ते ही घर का सामान चोरी हो जाता था, एक

तरह से घर में झाड़ू फ़िरी मिलती थी। सार्वजनिक स्थानों पर लगी घड़ियाँ और टेलीफोनों के पुर्जे भी चुरा लिए गए थे।

ऐन जिस स्थान पर अज्ञातवास में रह रही थी, वहाँ भी एक बार सेंधमार घुस आए। घर के पुरुषों ने सेंधमारों को भगाने का प्रयास किया। जैसे ही वो हटते, सेंधमार गोदाम में फिर घुस आते। मिस्टर वान दान पुलिस-पुलिस चिल्लाए, इससे सेंधमार भाग गए। गोदाम के दरवाजे का फट्टा लगा दिया गया, परंतु उसी समय सेंधमारों ने फट्टा फिर गिरा दिया। मिस्टर वान दान ने दरवाजे पर जोर से कुल्हाड़ी से प्रहार किया, तब सेंधमार भागे।

प्रश्न 7) ऐन फ्रैंक कौन थी? उसकी डायरी क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर : ऐन फ्रैंक एक यहूदी लड़की थी। वह मूल रूप से जर्मनी के फ्रैंकफर्ट की रहने वाली थी। जब 1933 में हिटलर की नाजी पार्टी फ्रैंकफर्ट में जीत गई, तब ऐन फ्रैंक का परिवार फ्रैंकफर्ट छोड़कर नीदरलैंड्स के एम्सटर्डम शहर में बस गया। परंतु जब 1940 में नीदरलैंड्स पर जर्मनी ने कब्जा कर लिया, तब यहूदियों पर अत्याचार बढ़ गए। जुलाई, 1942 में फ्रैंक परिवार अज्ञातवास में चला गया।

अज्ञातवास में रहते हुए ऐन फ्रैंक आठ सदस्यों में सबसे छोटी थी। घर में उसे नकचड़ी, तुनकमिज़ाज समझा जाता था। ऐसे में अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए ऐन ने डायरी लिखनी शुरू की। इस डायरी में ऐन ने अपने मन के भावों, अपने सुख-दुःखों को व्यक्त किया है। ये डायरी एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। इस में दूसरे विश्वयुद्ध के समय की आर्थिक स्थिति व सामाजिक स्थिति का तो वर्णन है ही, साथ ही यहूदियों पर होने वाले अत्याचारों का भी जीवंत चित्रण है। एक छोटी बच्ची द्वारा लिखी गई डायरी इसी कारण अति प्रसिद्ध हुई।

प्रश्न 8) "डायरी के पन्ने" पढ़ कर आपके मन में क्या प्रतिक्रिया होती है?

उत्तर : "डायरी के पन्ने" ऐन फ्रैंक की डायरी के कुछ पन्ने हैं। इन पन्नों को पढ़कर मन में करुणा का भाव उत्पन्न होता है। डायरी में वर्णन किया गया है कि जर्मनी के हिटलर में युद्धवाद और जातिवाद की भावना कितनी भयंकर व क्रूर थी। हिटलर के कारण साठ लाख यहूदियों को अत्याचार सहने पड़े। कई अज्ञातवास में चले गए। वे सूर्य के प्रकाश को भी तरस गए। कई यहूदियों को यातनागृह में भेज दिया गया। जातीय अहंकार व्यक्ति को पशु बना देता है। हिटलर अपने विरोधियों को जीवित नहीं देखना चाहता था।

डायरी पढ़कर मन में भाव उत्पन्न होता है कि एक छोटी बच्ची अपने परिवार सहित कष्ट उठाती है, ऐसे ही और भी परिवार होंगे। युद्ध किसी के लिए अच्छा नहीं, इससे अर्थव्यवस्था तो चौपट होती ही है, कई निर्दोष लोग भी मारे जाते हैं।

प्रश्न 9) लेखिका और पीटर के आपसी संबंधों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : ऐन और पीटर मित्र हैं। पीटर ऐन से प्रेम करता है, परंतु एक गर्लफ्रेंड की तरह नहीं बल्कि एक दोस्त की तरह। ऐन पीटर की प्रेम दीवानी है, क्योंकि अगर पीटर उसके कमरे में एक-दो दिन न जाए तो उसकी बुरी हालत हो जाती है।

पीटर अच्छा और भला लड़का है, परंतु कई बार ऐन उससे नाराज होती है, जैसे - धर्म के प्रति उसकी नफ़रत, खाने के बारे में उसका बातें करना। पीटर शांतिप्रिय, सहनशील और बेहद सहज आत्मीय व्यक्ति है। पीटर ऐन को कई ऐसी बातें कहने देता है, जिन्हें कहने की वह अपनी मम्मी को भी इजाजत नहीं देता। ऐन पीटर से उसके मन की बात जानना चाहती है, परंतु पीटर उसे कुछ नहीं बताता। इसलिए ऐन उसे घुन्ना कहती है।

पीटर और ऐन ने अपने कई वर्ष एनेक्सी में बिताए हैं। वो अक्सर भविष्य, वर्तमान और अतीत की बातें करते हैं, फिर भी ऐन को कुछ कमी लगती है।

प्रश्न 10) ऐन ने अपनी डायरी में किट्टी को क्या-क्या जानकारी दी है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : ऐन ने अपनी डायरी में किट्टी को तरह-तरह की जानकारी दी है :-

ऐन ने बताया - क्योंकि वो यहूदी है, यातनागृह से वो बचे रहें, इसलिए ऐन का परिवार, वान दान परिवार के साथ अज्ञातवास में चला जाता है। अज्ञातवास में रहते हुए उन्हें सामान और बिजली राशन से मिलते हैं।

वो देश की अर्थव्यवस्था की जानकारी देती है। वो बताती है कि हजार और पाँच सौ गिल्डर के नोट अवैध घोषित कर दिए गए हैं।

समय बिताने के लिए ऐन अपनी पढ़ाई तो करती है, फिल्म पत्रिका भी पढ़ती है और तरह-तरह से अपने बाल बनाती है। एक ही बात को बार-बार सुनती है और कहती है। अज्ञातवास में रहने वाले अनेक लोग हैं। हवाई हमले होते हैं। एक दिन में 350 ब्रिटिश वायुयान 550 टन गोला-बारूद बरसाते हैं।

चोरी चकारी बहुत बढ़ गई है। छोटे-छोटे आठ-दस साल के बच्चे घरों में घुसकर चोरी करते हैं। ऐन को नकचढ़ी, तुनकमिजाज माना जाता है। मिस्टर डसेल और मिसेज वान दान उसकी शिकायत मम्मी से करते हैं। ऐन अपने को बदलने की कोशिश भी करती है। ऐन जिस एनेक्सी में रहती है, वहाँ सेंधमार घुस जाते हैं, जिन्हें घर के पुरुष मिलकर भगाते हैं।

हिटलर जख्मी सिपाहियों से मिलता है तथा ब्रिटेन हॉलैंड को स्वतंत्र कराना चाहता है। ऐन के जन्मदिन पर उसे तरह-तरह के उपहार मिलते हैं। पीटर और ऐन की दोस्ती का वर्णन भी इस डायरी में है। विश्व में स्त्रियों की क्या स्थिति है, इसके साथ-साथ ऐन ने यह भी लिखा है कि स्त्रियों की स्थिति शीघ्र ही बदलेगी।

इस तरह ऐन ने अज्ञातवास के अपने जीवन की विस्तृत जानकारी किट्टी को दी है।

प्रश्न 11) ऐन की डायरी से उसकी किशोरावस्था के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर : ऐन एक चौदह वर्ष की किशोरी है। घर की सबसे छोटी सदस्य है। इस कारण घर के लोग उसको डाँटने का पूरा अधिकार रखते हैं। उसे नकचढ़ी, तुनकमिजाज समझते हैं। मिसेज़ वान दान और मिस्टर डसेल उसकी शिकायत उसकी माँ से करते हैं, इस कारण उसे अपनी माँ का उपदेश सुनना पड़ता है। ऐन को अपने जन्मदिन पर मिलने वाले उपहार अच्छे लगते हैं। किशोर ऐन को पीटर अच्छा लगता है। वो उसके साथ घंटों बातें करती है। मिस्टर डसेल के डाँटने पर वो उसके बिस्तर में दो ब्रश घुसा देते हैं। हम कह सकते हैं कि ऐन की डायरी में एक किशोर लड़की की भाव अभिव्यक्ति है, उसमें किसी प्रकार की बनावट व दिखावा नहीं है।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 12) सिद्ध कीजिए कि ऐन एक बहुत प्रतिभाशाली और परिपक्व लड़की थी?

उत्तर: ऐन एक प्रतिभाशाली और परिपक्व लड़की है। वह है तो किशोरावस्था की, परंतु उसने बहुत परिपक्वता से यहूदियों पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन किया है। छोटी सी ऐन ने देश की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का वर्णन भी सुंदरता से किया है, जैसे - खाने-पीने का सामान देशवासियों के पास नहीं है, चोरी-चकारी का बोलबाला है, हर दिन गोलाबारी होती है, हिटलर घायल सैनिकों से बातें करता है तथा ब्रिटेन को हॉलैंड के लोग अपना रक्षक मान रहे हैं।

परिपक्व व प्रतिभाशाली ऐन किशोरावस्था की है, इस कारण उसे डाँट लगती है, उपदेश सुनने को मिलते हैं। उसे उपहार पसंद हैं, फिल्मी कलाकार पसंद है और पीटर उसे अच्छा लगता है, प्रकृति के लिए वो तरसती है। ऐन ने यह सब कुछ परिपक्वता से लिखा है। इन सब कारणों से यह डायरी एक सबसे अधिक बिकने वाली डायरी है।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM